प्रथम अध्याय

रामदरश मिश्र : व्यक्तित्व एवं कृतित्व -

रामदरश मिश्र हिंदी के वरिष्ठ कवि, कथाकार और आलोचक हैं। गुणवत्ता और वैविध्य दोनों दृष्टियों से स्वातंत्र्योत्तर रचनाकारों में उनकी विशिष्ट पहचान है। विशेषकर उपन्यास और कविता में उनका योगदान निश्चित ही महत्वपूर्ण है।

मिश्रजी के व्यक्तित्व में कहीं कोई दीवार नहीं है। उन तक पहुँचना हर किसी के लिए सहज संभव है। मिश्रजी ने जीवन को जिस रूप में देखा, जाना और समझा है, उससे उनके व्यक्तित्व की रेखाएँ स्पष्ट से स्पष्टतर होती गयी हैं। उनके लिए जीवन कर्म और जिजीविषा का पर्याय है। उनका समग्र लेखन उनके जीवट को स्पष्ट करता है। गहन आस्था से मिलकर उनका व्यक्तित्व चेतन हो उठा है। जीवन को जीते हुए उससे मिले अनुभवों को ज्यों-का-त्यों कलम में बांध लेना मिश्रजी की उल्लेखनीय किंतु स्वभावगत विशेषता है।

"जीवन संग्राम के जीवंत योध्दा, उदार अलमस्त मानव, प्रगतिशील विचारक, बहुश्रृत, बहुपठित अध्यापक, लेखों ,निबंधों, कविताओं, कहानियों, उपन्यासों आदि के सर्जक सबको मिलाकर जो व्यक्तित्व बनता है, उसका नाम है - डॉ रामदरश मिश्र।" 1

जीवनी -

(1) जन्म - बचपन एवं पारिवारिक परिचय -

मिश्रजी का जन्म श्रावण पूर्णिमा 15 अगस्त, सन 1924 में गांव डुमरी, जनपद गोरखपुर में हुआ। उनका जन्म एक मध्यवर्गीय परिवार में हुआ था। उनके दो भाई और दो बहनें थीं। परिवार मध्यवर्गीय होने के कारण बचपन अभावों में बीता। उनके पिता का नाम श्री. रामचंद्र मिश्र था। उनके पिताजी गाने - बजाने के बेहद शौकीन थे। मिश्रजी की माँ का नाम कंवलपाती था। वे बहुत कर्मठ और परिश्रमी थीं। वे धार्मिक प्रवृत्ति की थीं। मिश्रजी के बडे भाई का नाम रामअवध मिश्र और मँझले भाई का रामनवल मिश्र है। मिश्रजी

जब **17** वर्ष के हो गए तभी उनकी शादी कर दी गयी। वे जब इंटर प्रथम वर्ष की परीक्षा दे रहे थे, उसी समय उनकी पत्नी का स्वर्गवास हो गया। उसका उनके दिल पर कोई आघात नहीं पहुँचा, क्योंकि उससे निकट का रागात्मक संबंध नहीं बन पाया था। इसके बाद सन 1948 ई. में उनकी दूसरी शादी हो गयी वे तब चौबीस - पचीस साल के थे। उस समय उनके मन में एक सुंदर, शिक्षित और शीलवान तथा सही अर्थ में सहयात्री बननेवाली नारी की तस्वीर थी। उनकी पत्नी का नाम सरस्वती था। उनसे पाँच बच्चे हैं। तीन लडके और दो लडकियाँ हैं।

(2) शिक्षा - दीक्षा - विद्यार्थी जीवन का संघर्ष -

रामदरश मिश्रजी की प्राइमरी और मिडिल की प्रारंभिक शिक्षा पास के गाँव बिशनपुरा में हुई। उन्होंने सन 1938 में, जब वे चौदह वर्ष के थे, अपनी प्राइमरी और मिड्डिल की परीक्षा पास कर ली। सन 1939 में मिश्रजी ने उर्दू मिडिल पास करके ढरसी गांव में विशेष योग्यता की परीक्षा सन 1940 में पास की। उसके बाद उन्होंने **'विशारद'** पास कर ली और सन 1943 में **'साहित्य रत्न'** भी पास कर लिया। आगे के अध्ययन के लिए वे बनारस चले गये। बनारस के कैंब्रिज एकाडमी के प्राइवेट स्कूल में उन्होंने मैट्रिक पास किया। इसके बाद बनारस हिंदू विश्व-विद्यालय से सन 1948 में इंटर पास किया। उसके बाद सन 1950 में बी.ए. ,सन 1952 में एम.ए. तथा सन 1957 में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की।

<u>व्यक्तिचित्र -</u>

मिश्रजी ऊँचे, गौरवर्णी, तेजस्वी हैं। वे एक सरल व्यक्ति हैं। रहन-सहन में सादगी उन्हें पसंद है। वे रूढियों के घोर विरोधी हैं।

मिश्रजी विनोदी व्यक्ति हैं वे दिल खोलकर हँसते और कहकहे लगाते हैं। इसप्रकार उनके विनोदी और कहकहे लगाने की रूचि का एहसास हमें साहित्य में देखने को मिलता है। उन्होंने हर पल और हर कण को जीया और भोगा है। बचपन से ही वे अत्यंत भावुक व्यक्ति हैं। मिश्रजी स्वभाव से संकोची हैं और हैं बडे विनयशील। वे भीड-भाड और सभा - सोसायटी से घबराते हैं। उनकी यह विशेषता है कि वे दूसरों को प्रभावित करने का प्रयास भी नहीं करते। उनकी और एक विशेषता यह है कि वे अपनी नीयत और अनुभूति के विपरीत कोई कार्य नहीं करते। मिश्रजी बचपन से ही संवेदनशील रहे हैं। जहाँ अपने को वे छोटा अनुभव करते हैं या जिस कार्य से उन्हें संतुष्टि नहीं होती है, उस कार्य से बचते हैं।

'मैं बचपन से ही अपने अस्तित्व की वांछनीयता और अवांछनीयता के प्रति बहुत संवेदनशील रहा हूँ। मुझे जहाँ अपनी उपस्थिति अवांछनीय लगती है वहाँ मैं नहीं जाना चाहता, जिस कार्य से मैं छोटा अनुभव करने लगता हूँ, उससे बचता हूँ। इस मायने में मैं ज्यादा संवेदनशील हूँ।'' 2

मिश्रजी का बाहय जीवन जितना - सीधा सादा और भोला-भाला है उतना ही उनका मन निर्मल एवं पवित्र है। वे दूसरों से बडे प्रेम से मिलते हैं। उनके मन में किसी के प्रति कोई गाँठ नहीं। अगर कोई अपशब्द भी कहे तो वे केवल अपने मन में ही वेदना का अनुभव करते हैं। युवकों को साहित्य सृजन में वे अनेक प्रकार से प्रोत्साहन देते हैं। मिश्रजी स्वभाव से उदार हैं, उसके साथ-साथ संवेदनशील और सहृदय भी हैं। वे सत्य के प्रति हमेशा सतर्क रहते हैं।

गांव परिवेश -

मिश्रजी गोरखपुर जिले के डुमरी ग्राम के मूल निवासी हैं। उनको यह अपढ, ग्रामीण, सरल गांव अत्यंत प्रिय है। वे अपने ग्राम्य-जीवन से इतने अभिभूत हैं कि इसीसे उन्हें साहित्य लिखने की प्रेरणा मिली। उन्होंने उस जीवन की प्रत्येक वस्तु को अपने साहित्य में समग्र रूप से उसी रूप में रखा है। मिश्रजी पर बचपन के साथियों से मिला प्यार एक अमिट छाप छोड जाता है क्योंकि उनके बीच अनेक छोटे-मोटे झगडे होते थे पर दु:ख में सभी एक-दूसरे की मदद करते हैं। उनको गांव के लोगों का साधनहीन जीवन बडा ही व्यथित करता है। उस गांव के जमींदारों से गरीब लोगों पर होनेवाले अन्याय, अत्याचार देखकर उनके मन को बडा ही दु:ख होता है। इसप्रकार उनके मन पर गांव- परिवेश का अतीव प्रभाव पडा है। गांव - परिवेश से ही कवि को जीवन के लिए प्रेरणा मिली या जीवन रस मिला है।

व्यवसाय -

सन 1952 में मिश्रजी हिंदु विश्व-विद्यालय में अस्थायी प्राध्यापक हो गये। साथ ही उन्होंने **'हिंदी आलोचना की प्रवृत्तियाँ और उनकी आधारभूमि '** विषय पर शोध कार्य भी शुरू किया। सन 1956 में मिश्रजी ने बडौदा में महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय में एक वर्ष तक अध्ययन किया। सन 1957 में अहमदाबाद के सेंट झेवियर्स कॉलेज से निमंत्रण पाकर अहमदाबाद आये जो उनके जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना है। अहमदाबाद व्यावसायिक दृष्टि से प्रगत शहर है। अपने क्षेत्र के लोगों को वहाँ पाकर मिश्रजी को बडी प्रसन्नता हुई। उन्हें एक आश्वस्ति का अनुभव हुआ और उनका संसार धीरे-धीरे बढता गया। गुजरात

के लोगों तथा छात्रों के प्रेम भरे स्वभाव ने उनके कवि मन को बडा प्रभावित किया। समग्र रूप से देखा जाए तो सामाजिक और साहित्यिक दोनों दृष्टियों से वे उनके जीवन के बहुत अच्छे दिन रहे।

मिश्रजी अहमदाबाद से सन 1959 में नवसारी चले गये, वहीं उन्होंने एस.बी.गरडा कॉलेज में सालभर अध्यापन कार्य किया। सन 1960 से सन 1964 तक वे अहमदाबाद में ही रहे। अगस्त 1964 से दिल्ली के पी.जी.डी.ए.बी कॉलेज में सन 1969 तक अध्यापन कार्य किया। सन 1969 में दिल्ली युनिव्हर्सिटी में आ गए और तब से आज तक वहीं हैं। सन 1971 में रीडर और सन 1983 में प्रोफेसर हुए। इस वक्त दिल्ली विश्व-विद्यालय के प्रोफेसर के पद से अवकाश ग्रहण किया है।

वे अपने जीवन की उपलब्धियों के प्रति बडे संतुष्ट हैं। सामान्य रूप से स्वस्थ रहना भी एक उपलब्धि ही है। वे स्वयं अपने जीवन को आँकते हुए कहते हैं - **"मैं मानता हूँ कि मैंने एक स्वस्थ जीवन जीया है और अदृष्ट के वरदान के रूप में इसे अपनी उपलब्धि मानता हूँ। - समग्रत: मैं अपनी तमाम सीमाओं को देखते हुए मानता हूँ कि, मुझे बहुत कुछ मिला।"** 3

बनारस, बडौदा, अहमदाबाद, दिल्ली आदि शहरों की जिंदगी को उन्होंने बहुत निकट से देखा। सामाजिक तथ्य को अपने साहित्य में चित्रित किया। आज हिंदी साहित्य में मिश्रजी कवि, कहानीकार, संपादक, समीक्षक, उपन्यासकार के रूप से सफलतम लेखकों में गिने जाते हैं। हिंदी साहित्य में उनका नाम कवि, कहानीकार, संपादक, समीक्षक, उपन्यासकार के रूप में बहुचर्चित हैं। उनका साहित्यिक व्यक्तित्व बहुमुखी है।

<u>कवि -</u>

डॉ. रामदरश मिश्रजी का साहित्य में प्रवेश कविता द्वारा ही हुआ। अपने काव्य सृजन के संबंध में स्वयं मिश्रजी ने लिखा है -

"मैंने कविता का रस सीधे जीवन से खींचना शुरू किया, कछार की प्रकृति से, बाढग्रस्त जिंदगी के अभावों और पीडाओं से, त्यौहारों और पर्वों के उल्लासों से।" 4

अब तक मिश्रजी के निम्नलिखित कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं -

1)	पथ के गीत	-	सन 1951 ई
2)	बेरंग बेनाम चिट्ठियाँ	-	सन 1962 ई
3)	पक गयी है धूप	-	सन 1969 ई
4)	कंधे पर सूरज	-	सन 1977 ई
5)	दिन एक नदी बन गया	-	सन 1985 ई
6)	मेरे प्रिय गीत	-	सन 1985 ई
7)	जुलूस कहाँ जा रहा है	-	सन 1989 ई

1) पथ के गीत -

उनका यह प्रथम कविता संग्रह है। इस संग्रह की अधिकतर कविताएँ अपने अँचल की मिट्टी से जुडी हुई हैं।

2) बेरंग बेनाम चिट्ठियाँ -

विसंगति और विडंबनापूर्ण जीवन स्थितियों के यथार्थ की पहचान पाने में इस कविता संग्रह की कविताएँ प्रयत्नशील हैं। यह काव्य संग्रह 'पथ के गीत' की अपेक्षा परिपक्व हैं। इसकी भूमिका में मिश्रजी ने लिखा है -

''दस-बारह वर्षों बाद मेरा दूसरा काव्य-संग्रह आपके सामने है, इस बीच दुनिया बदली, मैं भी बदला, मेरी कविताएँ भी बदलीं। दस बारह वर्षों की काफी अच्छी दूरी के बीच समय-समय पर लिखी गयी कविताओं में भाव-मूल्य और शिल्प-गठन का विषम स्तर दिखायी पडेगा।'' 5

इस काव्य संग्रह में प्रगतिवाद और नयी कविता की प्रकृति प्रतिबिंबित है। इन कविताओं में लोकोन्मुखता है और बिंबों के माध्यम से अनुभवों की अभिव्यक्ति है। इसमें संग्रहित कविताओं का मुख्य स्वर शृंगारिकता का होते हुए भी अन्य भाव चित्र उपेक्षणीय नहीं है। यह संकलन मिश्रजी के काव्य व्यक्तित्व के विकास की दूसरी सीढी है।

3) पक गई है धूप -

इस काव्य संग्रह की कविताएँ मिश्रजी की काव्य साधना की प्रौढ कविताएँ हैं। मिश्रजी ने समय को गहरे डूबकर जीया है। इनमें अनुभूतियों और सामाजिक यथार्थ के कई मोड उभरते चलते हैं। मिश्रजी ने इसकी भूमिका में लिखा है -

"मैंने अपनी इन कविताओं में अपने परिवेश को जी कर प्राप्त किए अनुभव सत्यों को परिवेश के बिंबों के माध्यम से ही अभिव्यक्त किया है।" 6

इस काव्यसंग्रह की कविताओं को उन्होंने स्वयं ही तीन भागों में विभक्त किया है। -

1) 'होने न होने '-में अनुभूति की कविताएँ संकलित हैं।
2) 'समय जल-सा'-में गीत और गीतात्मक संवेदना की छोटी-छोटी कविताएँ हैं।
3) 'मेरा आकाश' में प्राय: लंबी कविताएँ हैं।

इन कविताओं का फलक व्यापक है।

4) कंधे पर सूरज -

यह कवि का चौथा काव्यसंग्रह है। इसका प्रथम संस्करण सन 1977 में प्रकाशित हुआ। सन 1969 से 1977 तक की रचनाएँ इसमें संकलित हैं।कविताओं में विषय का वैविध्य मिलता है। इन कविताओं में सामाजिक विसंगतियों, व्यक्तिगत अनुभूतियों, शोषण, सामाजिक विद्रुपताओं, आज की सामाजिक, राजनैतिक व्यवस्था में जन सामान्य के अस्तित्व के संकट का चित्रण है। इन कविताओं में कवि के पास सूरज तो है लेकिन कंधे पर ही है। डॉ. नरेंद्र मोहन के शब्दों में -

"उनकी संकल्प चेतना और संघर्ष भावना, द्वंद्व और आत्म संघर्ष की इस चेतना में से आकार लेती दिखती है। इन कविताओं में व्यक्त संघर्ष के मूल में आत्म-विश्लेषण की प्रवृत्ति अधिक है। उनकी सामाजिक स्थितियों का विश्लेषण इस प्रवृत्ति से संचालित है।" 7

5) **दिन एक नदी बन गया -**

सन 1985 में प्रकाशित इस पुस्तक में कवि की आठवें दशक की रचनाएँ संकलित हैं। इन रचनाओं में कवि के परिपक्व विचारों की स्पष्ट झलक मिलती है। सामाजिक प्रतिबध्दता इन रचनाओं की विशेषता है। कवि के समाजवादी विचार बिना किसी पूर्वाग्रह के प्रकट हुए हैं। सामाजिक विद्रुपता, राजनीतिक भ्रष्टाचार, पूँजीवादी शोषण आदि के प्रति कई रचनाओं में कवि का आक्रोश प्रकट हुआ है। **'कलम', 'घरौंदे', 'वह', 'माँ,' 'मकान', 'चूहे'** आदि कविताएँ इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं। इस संग्रह की अधिकांश कविताएँ जनवादी रचना का प्रतिनिधित्व करती हैं।

6) **मेरे प्रिय गीत -**

प्रस्तुत संग्रह में कवि के सभी काव्य पुस्तकों से चुने गए गीत संकलित हैं। एक आलोचक के अनुसार मिश्रजी के गीत अपनी संवेदनाओं में नए हैं तथा बदलते गांव की नई संवेदनाओं को रूपायित करते हैं। इसमें संकलित गीतोंका अपना एक वैशिष्ट्य है। उनमें बडी चित्रात्मकता और आत्मीयता है। इन गीतों ने कवि को प्रगतिशील श्रेणी के कवियों में प्रतिष्ठित किया है।

7) **जुलूस कहाँ जा रहा है -**

यह मिश्रजी द्वारा रचित सन 1984 के बाद की कविताओं का संग्रह है। इसमें कुछ कविताएँ इसके पूर्व की भी हैं। वे कवि को प्रिय होते हुए भी स्थानाभाव के कारण **'दिन एक नदी बन गया'** में नहीं आ पाई थीं।

" जन-जीवन के प्रति अटूट आस्था रखनेवाले कवि की इन रचनाओं में विवशता, उदासी और तनाव के बीच टूटते संबंधों की पीडा हृदयको स्पर्श कर जाती है।" [8]

<u>गझल-बाजार को निकले हैं लोग -</u>

मिश्रजी ने अपनी साहित्य यात्रा के दौरान कुछ गजलों की भी रचना की है। कवि स्वीकार करते हैं।

"गजल मेरी मुख्य काव्य शैली न थी, न रहेगी। मैं इस शैली पर अपना कोई अधिकार नहीं

समझता।'' 9

इस नम्र स्वीकृति के उपरांत भी उनकी गजलें सफल रचनाओं की कोटि में रखी जा सकती हैं। इन गजलों का विषय काल्पनिक न होकर यथार्थ जीवन की कटुता ही है। यथार्थ जीवन का तीखापन कवि की अनेक कविताओं में अभिव्यक्त हुआ है। इन गजलों में भी कवि की समाज सम्बध्दता की अभिव्यक्ति हुई है।

इन गजलों में समाज और राजनीति की असंगतियों पर कवि ने प्रहार किया है, तथा इनके प्रति कवि का गहरा आक्रोश प्रकट हुआ है। कवि अपनी आस्थावादी दृष्टि के कारण इन प्रतिकूल परिस्थितियों में भी निराश नहीं होता। वह तो उन्हें अपने अनुकूल बनाने का प्रयास करता है।

कहानी संसार -

डॉ. रामदरश मिश्रजी ने कविता लेखन के बाद कहानी लेखन की ओर विशेष ध्यान दिया। इस संबंध में मिश्रजी ने स्वंय लिखा है -

''कथा साहित्य के लेखन के बारे में मेरी उन्मुखता संभवत: मेरी सामाजिक जिंदगी के प्रति लगाव का ही परिणाम था।'' 10

डॉ. रामदरश मिश्रजी के निम्नलिखित कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। -

1)	खाली घर	-	सन 1969 ई
2)	एक वह	-	सन 1974 ई
3)	दिन चर्या	-	सन 1979 ई
4)	सर्प दंश	-	सन 1982 ई
5)	बसंत का एक दिन	-	सन 1982 ई
6)	इकसठ कहानियाँ	-	सन 1984 ई

1) खाली घर -

इस कहानी संग्रह की कहानियाँ गाँव और शहर दोनों की जिंदगी का तनाव, संघर्ष, टूटन-घूटन आदि स्थितियों को चित्रित करनेवाली हैं। इस संग्रह की **'चिट्ठियों के बीच', 'खाली घर', 'मंगल यात्रा',**

'बादलों भरा दिन' 'एक औरत एक जिंदगी ' आदि कहानियाँ विशेष उल्लेखनीय हैं। उनमें मौत की छाया और सूनेपन की अभिव्यंजना, अंधविश्वासों का खंडन, शहरी जीवन की यांत्रिकता, तनाव, घुटन अबला का सबलापन आदि का चित्रण बडे मार्मिक ढंग से हुआ है।

2) एक वह -

प्रस्तुत कहानी संग्रह की कहानियों में राजनीतिक भ्रष्टाचार, जातिवाद, आधुनिक शिक्षा पध्दति की विसंगतियाँ तथा वर्तमान जीवन की पाखंड पूर्णता पर व्यंग्य किया गया है। इस कहानी संग्रह में **'वह एक','पराया शहर', 'सडक','मिसफिट','संबंध','निर्णयों के बीच निर्णय ','उत्सव','दूरियाँ','पिंजडा','जमीन','घर'** आदि कहानियाँ संग्रहित हैं। इस कहानी संग्रह के माध्यम से डॉ. मिश्रजी जिंदगी की एक नयी प्रामाणिक पहचान कराते हैं।

3) दिनचर्या -

इस कहानी संग्रह में पंद्रह कहानियाँ संकलित हैं। इनके पार्श्व में गाँव और शहर दोनों है। साधारण व्यक्ति की दु:ख भरी संघर्ष कथा और व्यथा -कथा ही कहानियों का केंद्र है। इस संग्रह की **'दिनचर्या','मुर्दा मैदान','बेला मर गई','एक रात','एक अधूरी कहानी '** आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। महानगरीय जीवन की विसंगतियों और विद्रुपताओं का सशक्त चित्रण इन कहानियों का केंद्रबिंदू है।

4) सर्प दंश -

इस कहानी संग्रह में दस कहानियाँ संकलित हैं। उन कहानियों में से नौ के भीतर विविध कणों से उठायी गयी व्यापक मानवीय पीडा ही प्रमुख विषय है। ***'सर्प दंश'*** कहानी संग्रह सन 1982 में प्रकाशित हुआ है।

5) वसंत का एक दिन -

'वसंत का एक दिन' यह कहानी संग्रह सन 1982 में प्रकाशित हुआ। इस कहानी संग्रह की विशेषता यह है कि, इसमें सभी कहानियाँ लंबी हैं जिनमें शिल्प का चक्करदार आकर्षण गहराई के साथ उमडता है। इस कहानी संग्रह में छ: कहानियाँ संकलित हैं।

6) इकसठ कहानियाँ -

अपने मित्रों और पाठकों द्वारा किये आग्रह पर मिश्रजी ने अपनी अब तक की सभी कहानियों का एक संग्रह प्रकाशित किया है। **'इकसठ कहानियाँ ','** इन्ही कहानियों के संग्रह का शीर्षक है। प्रस्तुत कहानी संग्रह उनके साठवें जन्म दिन के शुभ अवसर पर प्रकाशित हुआ। इसमें उनकी लगभग सभी कहानियाँ संगृहित हैं। इन सभी कहानियों के बारे में डॉ. नित्यानंद तिवारी ने कहा है -

''रामदरश मिश्र की कहानियों की एक बडी विशेषता है कि उनको पढते ही पाठक को इस बात का विश्वास हो जाता है कि, लेखक जो कुछ कह रहा है वह सब कुछ उसका भोगा हुआ है।''11

समीक्षा -

रामदरश मिश्रजी ने निम्नलिखित समीक्षात्मक कृतियाँ लिखी हैं -

1) हिंदी उपन्यास : एक अंतर्यात्रा (1968) -

इस कृति में प्रत्येक धारा के प्रतिनिधि उपन्यासकारों की प्रतिनिधि कृतियाँ चुनकर उनकी समीक्षा की गयी है।

2) हिंदी कहानी : अंतरंग पहचान (1977)

इस आलोचनात्मक कृति में सन 1938 के पश्चात् प्रकाशित प्रमुख कृतियों का सर्वेक्षण प्रस्तुत किया गया है। यह कृति मिश्रजी की पूर्व प्रकाशित कृति **'हिंदी कविता: तीन दशक'** का संशोधित - परिवर्तित रूप है।

3) हिंदी समीक्षा : स्वरूप और संदर्भ - (1974 ई)

बनारस हिंदु विश्वविद्यालय से पीएच.डी. उपाधि के लिए स्वीकृत शोध-प्रबंध है। इस कृति को 'हिंदी आलोचना का इतिहास ' भी नाम दिया गया है।

4) **आधुनिक हिंदी कविता : सर्जनात्मक संदर्भ (1986 ई)**

5) **ऐतिहासिक उपन्यासकार : वृंदावनलाल वर्मा (1964 ई)**

6) **साहित्य संदर्भ और मूल्य। (1961 ई)**

7) **छायावाद का रचनालोक। (1981 ई)**

8) **हिंदी आलोचना का इतिहास। (1960 ई)**

9) **आज का हिंदी साहित्य : संवेदना और दृष्टि। (1975 ई)**

10) **आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य : सर्जनात्मक संदर्भ।**

11) **आलोचना की कुछ नयी दिशाएँ (1977)**

12) **हिंदी कविता : आधुनिक आयाम। (1978 ई)**

<u>संपादन -</u>

डॉ. रामदरश मिश्रजी की संपादित कृतियाँ इस प्रकार हैं -

1) हिंदी के आँचलिक उपन्यास। (1984 ई)
2) कथाकार प्रेमचंद। (1982 ई
3) हिंदी उपन्यास के सौ वर्ष (1984 ई),
4) काव्य लेखक बालकृष्ण शर्मा 'नवीन '। (1964 ई)
5) साहित्य : संदर्भ और मूल्य
6) हिंदी कहानी : दोन दशक यात्रा।
7) काव्य गौरव।
8) कथा सप्तक।

सहयोगी संपादकों के साथ भी इन्होंने कुछ कृतियों का संपादन किया है -

1) आधुनिक हिंदी उपन्यास - भीष्म सहानी और भगवती प्रसाद निदारिया के साथ।
2) मुट्ठियों में बंद आकार - सावित्री सिन्हा के साथ।

जीवनी - संस्मरण

अबतक चार खण्ड प्रकाशित हुए हैं। यह लेखक के जीवन का सफरनामा है।

1) जहाँ मैं खडा हूँ। (1984 ई)
2) रोशनी की पंगडडियाँ। (1988 ई)
3) टूटते बनते दिन - (1990 ई)
4) उत्तर पथ - (1991 ई)

रामदरश मिश्र का उपन्यास - संसार

1) पानी के प्राचीर - (1961 ई)

रामदरश मिश्रजी का **'पानी के प्राचीर'** यह एक महत्वपूर्ण आँचलिक उपन्यास है। यह मिश्रजी का पहला उपन्यास है जो 1961 में प्रकाशित हुआ है। इस उपन्यास की कथा पांडे पुरवा अँचल से संबंधित है। इसमें चित्रित गांव एक विशिष्ट गांव है। वह पूर्वी उत्तर प्रदेश के ऐसे भूभाग से संबंधित है, जो अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण **'राप्ती और गौरा'** दो नदियों से घिरा हुआ है। मिश्रजी ने **'पानी के प्राचीर'** में पांडे पुरवा अँचल को एक बिंब बनाया है और उसके जरिए स्वातंत्र्यपूर्व भारत के देहात की यथार्थ कहानी प्रस्तुत की है। **'पानी के प्राचीर' एक अभावग्रस्त गांव के संघर्षशील लोगों की जीवन-गाथा है।** इस उपन्यास का सविस्तर विवेचन ही प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का विषय है।

2) जल टूटता हुआ -(1969 ई)

'जल टूटता हुआ' उपन्यास पूर्वी उत्तर प्रदेश में आजादी के तुरंत बाद के वर्षों में देहातों के यथार्थ को समझने की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इस यथार्थ को लेखक ने गाँव के किसानों के मध्यवर्ग की दृष्टि से देखा है। यह दृष्टि मध्यवर्ग के साधारण हिस्से की दृष्टि है। यह वर्ग साधारण रूप से शिक्षित भी है। यह गांव का सबसे व्यापक और बहुसंख्यक किसान वर्ग है। इसके संस्कारों और विचारों की दृष्टि से लेखक ने परिवर्तन के प्रवाह में पडे देहाती जीवन को देखा, इन गांवों की बदलती हुई स्थितियों, उभरती नई सामाजिक शक्तियों, उनके घात-प्रतिघातों, उनके दुख-दर्दो, खुशियों और आशा आकांक्षाओं को चित्रित किया है। उपन्यास में आजादी के बाद के सालों में उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल के गांवों में जो परिवर्तन आए, उनको कला में उतारने की कोशिश की है। **'जल टूटता हुआ'** का महत्व इस बात में है कि, विचार और संवेदना, कथ्य और संरचना के स्तर पर वह **'पानी के प्राचीर'** से बहुत आगे की रचना है।

'जल टूटता हुआ' यह उपन्यास व्यवस्था के बदलाव के संघर्ष में व्यक्ति मन के अंतर्निषेधों का सवाल है। स्वातंत्र्योत्तर ग्राम जीवन के बदलाव की सही पहचान, बनते-बिगडते नये मूल्य, आशावादिता में मोहभंग का विस्फोट, राजनीतिक दबाव में उभरे नये सामाजिक आयामों का बिंबात्मक चित्रांकन आदि - विशेषताओं को लेकर **'जल टूटता हुआ'** उपन्यास सन 1969 में प्रकाशित हुआ।

3) बीच का समय - (1970 ई)

'बीच का समय' यह उपन्यास **'पानी के प्राचीर'** और **'जल टूटता हुआ'** उपन्यासों से थोडा भिन्न प्रतीत होता है। चूंकि, इसमें लेखक ने सामाजिक समस्याओं को तो मुख्य रूप से चित्रित नहीं किया लेकिन प्राध्यापक और उसकी छात्रा दोनों के मन के द्वंद्व को बडी सूक्ष्मता से उजागर करने का प्रयास किया है। यह उपन्यास 1970 में प्रकाशित हुआ है। यह उपन्यास पाकिट बुक में प्रकाशित साहित्य की **'ख्याति'** का शिकार हुआ है। इस उपन्यास के बारे में डॉ. प्रेम कुमार लिखते हैं -

''बीच का समय'पढकर एक सुखद अनुभव यह होता है कि, रामदरश मिश्र ने इस चुनौती को स्वीकार कर कई मायनों में लेखकीय दायित्व का निर्वाह किया है।''12

इस उपन्यास के संदर्भ में डॉ. महावीरसिंह चौहान ने लिखा है कि -

''बीच का समय '' मूलत: रूमानी संवेदना का उपन्यास है। इसमें स्त्री-पुरूष के उस आदिम आकर्षण का वर्णन है, जिसमें स्वप्न और भावना के हलके गहरे रंग आपस में घुल मिलकर एक सप्तरंगी संसार की रचना करते है।'' 13

4) सूखता हुआ तालाब - (1972 ई)

'सूखता हुआ तालाब' यह उपन्यास प्रथम दो उपन्यासों के क्रम में समकालीन ग्राम-जीवन के बदलते भाव-बोध को प्रस्तुत करता है, जिसमें समय के दबाव के नये स्वरों एवं नये नाते-रिश्तों की परख और पहचान उभारी गई है। यह एक प्रतीकात्मक उपन्यास है। तालाब के बिम्बके माध्यम से गांव के टूटते-बनते रिश्तों और संबंधों का यथार्थ चित्रण हुआ है। लोग मछली के समान छटपटा रहे हैं, मुक्ति का मार्ग उन्हें नहीं दीखता। यह उपन्यास 1972 ई में प्रकाशित हुआ है।

5) अपने लोग - (1976 ई)

निश्रजी का यह उपन्यास गांव के यथार्थ का चित्रण करता है। यह उपन्यास शिल्प और संवेदना के स्तर पर उनके पूर्ववर्ती उपन्यासों से अलग अपनी निजी पहचान बनाता है। **'अपने लोग'** में सामाजिक दुख-दर्द और इच्छा-आकांक्षा की कहानी है। इस उपन्यास में छोटे शहरों की आज की जिंदगी का चित्र प्रस्तुत किया गया है। **'अपने लोग'** शीर्षक व्यंग्यपरक है। जो अपने समझे जाते हैं वे काफी घटिया, स्वार्थी और कुटिल हैं। लोग ऊपर से अपनापन बहुत प्रकट करते हैं लेकिन अंदर से अपने अवसर की ताक में रहते हैं। यह उपन्यास 1976 ई में प्रकाशित हुआ है।

6) रात का सफर - (1976 ई)

'रात का सफर ' इस उपन्यास की कहानी उन सारी लडकियों के सफर की कहानी है। जिन्हें विवाह के पश्चात एक लंबी अंधेरी रात अजगर की तरह अपने गुंजलक में लपेट लेती है और जो टूट- टूट कर पल-पल रीत कर जीने के लिए अभिशप्त होती हैं। इसमें लेखक ने दिनेश के माध्यम से आधुनिक कहे जानेवाले आज के पुरूष-वर्ग के घिनौने चरित्र का उद्‌घाटन किया है। उपन्यास की कथा पूर्व-दीप्ति पध्दति (Flash back) पर कही गयी है। यह उपन्यास अपने सीमित आकार में भी और व्यक्तिगत संवेदना के

चरित्र में भी यथाशक्य एक व्यापक सामाजिक संवेदना की रचना कर लेता है।

7) आकाश की छत - (1979 ई)

इस उपन्यास में दिल्ली में आयी बाढ का लेखक ने वर्णन किया है। यह उपन्यास आत्मकथात्मक शैली में लिखा है। गांव की बाढग्रस्त जिंदगी इसका वर्ण्य-विषय है। इस उपन्यास की कथा-संरचना कुछ भिन्न प्रकार की है। इसका आरंभ एक संकट की बिंदू से होता है। यह उपन्यास 1979 में प्रकाशित हुआ है।

8) बिना दरवाजे का मकान - (1984 ई)

'बिना दरवाजे का मकान' हिंदी के उन उपन्यासों की श्रेणी में आता है जो समसामयिक यथार्थ को पर्त-दर-पर्त उघाडने के लिए महत्वपूर्ण हैं। इस उपन्यास के शीर्षक से ही पता चलता है कि, **'बिना दरवाजे का मकान'** बढती हुई सामाजिक आर्थिक असुरक्षा की बेलौस - अभिव्यक्ति है। यह उपन्यास वर्तमान सामाजिक संबंधों और घटितमान सामाजिक परिवर्तन का एक खूबसूरत और विश्वसनीय दस्तावेज है।

9) दूसरा घर - (1986 ई)

दूसरा घर'यह उपन्यास स्वदेश के ही प्रवास में जीवन बिता रहे लोगों की जीवनी जैसा एक उपन्यास है जो एक स्तर पर भीषण गरीबी से जूझ रहे लोगों की मार्मिक गाथा प्रस्तुत करता है तो दूसरे स्तर पर अपने ही देश के दूसरे हिस्से में बस जाने वाले लोगों को **'विदेशी'** मानने की प्रवृत्ति को उजागर करता है। यह उपन्यास उसी ज्वलंत समस्या को सामने रखता है।

समकालिन कथा-साहित्य में डॉ. रामदरश मिश्र ने मूलत: एक आँचलिक उपन्यासकार के रूप में पहचान बनाई है लेकिन आँचलिकता उनके अनुभव और अन्वेषण की मर्यादा नहीं ,दिशा है। मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण और मर्दन पर आधारित वर्तमान व्यवस्था के अमानवीय रूप ,उसके दुचक्र में फँसे आदमी की करूण विवशता और असंतोष, प्रतिगामी और परिवर्तनगामी शक्तियों के बीच चलनेवाले संघर्ष आदि को वर्तमान सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक सच्चाइयों के बीच रखकर पारिभाषित करने का प्रयास मिश्रजी ने अपने उपन्यासों में किया है।

'पानी के प्राचीर' 'जल टूटता हुआ' और 'सूखता हुआ तालाब ' में मुख्यत: गाँव के यथार्थ का चित्रण हुआ है।'पानी के प्राचीर' स्वातंत्र्यपूर्व का गाँव है और जल टूटता हुआ स्वातंत्र्य प्राप्ति पश्चात का। यह कथन इस बात का संकेत करता है कि जिस गाँव को मैने इन दोनों उपन्यासों में चित्रित किया है वह भौगोलिक रूप से एक होकर भी चरित्र में दो गाँव है यानी स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात वही गाँव अपने पूरे चरित्र में बहुत बदला है। इस बदलाव को इसके विविध आयामों में पहचान लेने की तडप ही 'जल टूटता हुआ है।' 14

इनमें आँचलिकता का आधार है परंतु **'बीच का समय'** और **'रात का सफर'** में आँचलिकता का आग्रह नहीं है। **' बीच का समय '** मूलत: 'रूमानी संवेदना का उपन्यास है। इसमें स्त्री-पुरूष के आदिम आकर्षण का वर्णन है। **'रात का सफर '** में नारी जीवन की विडंबनापूर्ण स्थिति का संवेदनात्मक निरूपण हुआ है। **'अपने लोग '** कसबाई जीवन की भीतरी पर्तो को खोलता है। **'आकाश की छत '** में दिल्ली की अप्रत्याशित वाढ में फँसे एक व्यक्ति की पीडा की व्यंजना है। **'दूसरा घर'** में ऐसे लोगों की कहानी है। अपने गाँवों की जमीन से उखडकर भी उखड नहीं पाते और औघोगिक नगर की जमीन में जम कर भी जम नहीं पाते। प्रतिबध्दता के सर्जनात्मक रूप के कारण समकालिन हिंदी उपन्यासकारों में मिश्रजी ने अपनी अलग पहचान बनाई है।

निष्कर्ष -

हिंदी के सुविख्यात यथार्थवादी और आँचलिक कथाकार डॉ. रामदरश मिश्रजी का जीवन व्यक्तित्व एवं कृतित्व गाँव की मिट्टी की गंध से महकता है। उनका बचपन गाँव में गुजरा लेकिन शिक्षा और जीविका के लिए वे नगर आए और बाद में नगर में ही रहे। नगर की धकापेल में भी वे अपने ग्रामीण संस्कारों को नहीं भूले, अपितु अपने साहित्यिक माध्यम से उन्हें न सिर्फ सुरक्षित रखा, उसे संवर्धित करने का प्रयास किया है। उनके साहित्यकार का प्रारंभ कवि के रूप में हुआ ,पर बाद में उनकी विशेष रूचि कथा साहित्य की ओर रही। उनका व्यक्तिगत जीवन एकांगी रहा परंतु उनका साहित्यिक व्यक्तित्व बहुमुखी बना। नाटक को छोडकर, उन्होंने कविता, कहानी, उपन्यास, निबंध, आलोचना, संपादन, आत्मकथा जैसी प्राय: सभी विधाओं में समृध्द साहित्य रचना की। इस लेखन प्रक्रिया में उन्होंने अपने संस्कारशील अध्यापक को भी सदैव जीवंत रखा। स्वातंत्र्योत्तर रचनाकारों में उनकी विशिष्ट पहचान है। कथा-साहित्य विशेषकर उपन्यास और कविता में उनका योगदान महत्वपूर्ण है। डॉ. फूलबदन यादव ने उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को सही मानों में आंका है -

"जीवन संग्राम के जीवंत योध्दा, उदार अलमस्त मानव, प्रगतिशील विचारक, बहुश्रृत, बहुपठित अध्यापक, लेखों ,निबंधों, कविताओं, कहानियों, उपन्यासों ''आदि के सर्जक सबको मिलाकर जो व्यक्तित्व बनता है उसका नाम है - डॉ. रामदरश मिश्र। '' 15

भारतीय संस्कारों तथा ग्रामीण जीवन की ताजगी उनके जीवन, व्यक्तित्व और साहित्य को निरंतर प्रसन्नचित्त बनाती रही है।

संदर्भ - संकेत

1) डॉ. यादव फूल बदन :- रामदरश मिश्र व्यक्तित्व एवं कृतित्व -पृ.-1
2) डॉ. मिश्र रामदरश: कितने बजे हैं, जहां मैं खडा हूँ पृ.-69
3) डॉ. यादव फूल बदन :रामदरश मिश्र -व्यक्तित्व एवं कृतित्व से उध्दृत - पृ.-1
4) डॉ. रामदरश मिश्र :इकसठ कहानिर्या भूमिका मेरी कहानियाँ से।
5) डॉ. रामदरश मिश्र: बेरंग बनाम चिट्ठियाँ भूमिका पृ.-1
6) डॉ. रामदरश मिश्र : पक गई है धूप- भूमिका पृ.-3
7) डॉ. नरेद्र मोहन :'कविता ' की वैचारिक भूमिका पृ.-92
8) डॉ फूलबदन यादव : डॉ. रामदरश मिश्र - व्यक्तित्व एवं कृतित्व पृ. - 39-40
9) डॉ. रामदरश मिश्र : बाजार को निकले हैं लोग - भूमिका पृ. -1
10) डॉ. रामदरश मिश्र :इकसठ कहानियाँ भूमिका मेरी कहानियाँ।
11) डॉ. रामदरश मिश्र :इकसठ कहानियाँ- आवरण (फ्लैप) से उध्दृत।
12) डॉ. नित्यानंद तिवारी / डॉ. ज्ञानचंद गुप्त :'रचनाकार रामदरश मिश्र पृ.- 172
13) डॉ. रामदरश मिश्र :'हिंदी उपन्यास के सौ वर्ष में संग्रहित लेख पृ.-396
14) सं. भीष्म साहनी डॉ. रामजी मिश्र / भगवती प्रसाद निदारिया: 'आधुनिक हिंदी उपन्यास' में संकलित डॉ. रामदरश मिश्र के लेख से उदधृत पृ.-195
15) डॉ. फूलबदन यादव :रामदरश मिश्र -व्यक्तित्व एवं कृतित्व पृ.- 1